एकादशोऽध्यायः
कारक एवं विभक्तियाँ

प्रायः कारक आठ माने जाते हैं :-

1. कर्त्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. सम्प्रदान, 5. अपादान, 6. सम्बन्ध, 7. अधिकरण, 8. सम्बोधन।

वास्तव में कारक (क्रिया की सिद्धि में निमित) छः ही हैं। सम्बोधन और सम्बन्ध कारक नहीं, क्योंकि वे क्रिया की सिद्धि में निमित्त नहीं होते अपितु दूसरे शब्दों से सम्बन्ध रखते हैं। जैसे :-

हे राम! त्वं श्यामस्य पुस्तकं नारायणाय देहि।''

इस वाक्य में राम (सम्बोधन) तथा श्याम (सम्बन्ध) ''देहि'' क्रिया से नहीं।

कारक का ज्ञान शब्द के साथ प्रयुक्त हुई विभक्ति को देखकर होता है। हिन्दी में विभक्ति - चिन्ह- ने, को, में आदि और संस्कृत में - सु, और जस् आदि है।

उदाहरणातर्थ जैसे :-

पुस्तक मेज़ पर पड़ी है- ''पुस्तकं पादफलके वर्तते''।

यहाँ ''पुस्तक'' कर्त्ता है और ''पादफलक'' अधिकरण। इसका ज्ञान इनके साथ प्रयुक्त विभक्तियों से ही हो रहा है।

विशेष विभक्ति- नियम

1. कर्तृ कारक

(प्रथमा विभक्ति)

1. हिन्दी में कर्तृ वाच्य में कर्तृ कारक का विभक्ति ''ने'' गै। उसका प्रयोग सब वाक्यों में नहीं होता। केवल भूतकाल के कुछ भेदों में होता है। चाहे विभक्ति ''ने'' लगी हो या नहीं, हिन्दी के कर्तृवाच्य के कर्त्ता का अनुवाद संस्कृत में प्रथमा विभक्ति द्वारा किया जाता है। जैसे :-

(क) ''ने'' से युक्त कर्त्ता :-

मैंने तुम्हारी पुस्तक नहीं देखी - अहं तव पुस्तकं नापश्यम्,

(ख) ''ने'' से रहित कर्त्ता :-

देश भक्त विद्यार्थी ही भारत माता की सेवा करेंगे।

देश भक्ताश्छात्रा एव भारतमातरं सेविष्यन्ते।

2. संस्कृत में कर्तृ वाच्य में प्रेरक कर्त्ता का अनुवाद भी प्रथमा विभक्ति से ही करते हैं। जैसे :-

पिता पुत्र को पुस्तक पढ़ाता है।

पिता पुत्रं पुस्तकं पाठयति

3. वस्तुओं के नाम - मात्र बताने में भी प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

कलम, दवात, कागज़, स्याही = लेखनी, मसीपात्रम, पत्रम्, मसी।

4. सम्बोधन का अनुवाद भी प्रथमा विभक्ति से ही करते हैं। जैसे :-

हे वीरो! उठो - हे वीराः ! उतिष्ठत।

5. कर्म वाच्य से कर्म में द्वितीया नहीं आती बल्कि प्रथमा आती है। जैसे :-

ब्रह्मचारी वेद को पढ़ते है : बटुभिः पठ्यते वेदः।

6. नामवाचक ''इति'' ''नाम'' आदि अव्ययों के योग में प्रथमा आती है। जैसे :-

विक्रमादित्य नाम का राजा था = विक्रमादित्यो नाम राजा आसीत्।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. गान्धी जी ने भारत की सेवा की।
2. स्वामी दयानन्द ने वेद का भाष्य किया।

3. तुम स्वयं अन्धेरे में हो, दूसरों को क्या प्रकाश दोगे ?
4. मैं बाग में जा कर स्वाध्याय करता हूँ।
5. रथ के घोड़े तेज़ दौड़ते हैं।
6. तुम सब खेल कर पढ़ते हो।
7. उस वृक्ष के पत्ते और फल गिरते हैं।
8. श्रीकृष्ण ने भीम से जरासन्ध को मरवा डाला।
9. वे स्वयं पतित हैं दूसरों को क्या उठायेंगे।

2. कर्म-कारक

(द्वितीया - विभक्ति)

1. आचार्य पाणिनी के अनुसार कर्म की यह परिभाषा है :- "कर्त्ता सबसे अधिक जिस पदार्थ को चाहता है वह कर्म है।" जैसे-पयसा ओदनं भुङ्क्ते = दूध से भात खाता है। यहाँ दूध की अपेक्षा भात कर्त्ता को अधिक पसन्द है।

(क) हिन्दी में कर्तृ वाच्य में कर्म कारक की विभक्ति "को" है। प्राय: वह अचेतन कर्म के बाद लुप्त रहती है। चाहे वाक्य में इसका प्रयोग हो या न हो, कर्तृ वाच्य के कर्म का अनुवाद संस्कृत में द्वितीया विभक्ति में किया जाता है। जैसे :-

हम अभी फल खायेंगे = वयमिदानीमेव फलानि खादिष्यामः।

उनका अनुवाद भी कर्तृ वाच्य में द्वितीया से होता है। जैसे :-

(*i*) इस रोग ने तुम्हें कमज़ोर कर दिया है = अयम् रोगस्त्वां दुर्बलमकरोत्।

(*ii*) हम उन्हें नहीं जानते = वयं तान्न जानीमः।

(*iii*) राम मुझे मच्छरों ने बहुत काटा = रात्रौ मां मशका भृशमदशन्।

2. गत्यर्थक (जाना, चलना आदि) धातुओं के साथ द्वितीया होती है। जैसे :-

दो भाई स्कूल जाते हैं = भ्रातरौ पाठशालां गच्छतः।

सिंह वन में विचरता है = सिंहः वने विचरति।

3. अधिशीङ्, अधिस्था, अधि-आस्, धातुओं के साथ द्वितीया होती है। जैसे :-

(*i*) बालक पलंग पर सोता है = बालः पर्यङ्कमधिशेते।

(*ii*) शिष्य आसन पर बैठता है = हरिः वैकुण्ठमध्यास्ते।

(*iii*) हरि वैकुण्ठ में रहता है = हरिः वैकुण्ठमध्यास्ते।

4. जब "वस्" धातु से पूर्व उप, आ या अधि उपसर्ग का प्रयोग होता है तब रहने के स्थान वाचक शब्द में द्वितीया आती है जैसे :-

राजा लोग महलों में रहते है = नृपाः प्रासदेषु उपवसन्ति, अनुवसन्ति, आवसन्ति, अधिवसन्ति।

5. जब "विश्" धातु से पूर्व "अभि+नि" उपसर्गों को लगा दिया जाता है तो द्वितीया होती है। जैसे:-

श्रेष्ठ जन सन्मार्ग पर चलते हैं = श्रेष्ठिनः सन्मार्गमभिनिविशन्ते।

उपपदविभक्ति - द्वितीया

क्रिया के साथ सम्बन्ध रखने के कारण शब्दों में जो विभक्तियां आती हैं वे कारक विभक्तियाँ कहलाती है। शब्दों में जो विभक्तियां उपपदों अर्थात् सीमावर्ती अव्ययादि शब्दों के प्रभाव से आती हैं, वे उपपद विभक्तियाँ कहलाती हैं। ऊपर जिन प्रथमा तथा द्वितीया विभक्तियों का प्रयोग बनाया गया है वे कारक विभक्तियाँ हैं। अब उस द्वितीया का प्रयोग बताया जाता है जो उपपद के प्रभाव से आती हैं।

1. उभयतः, अभितः, परितः तथा सर्वतः के योग में द्वितीया होती है :-
   (*i*) विद्यालय के दोनों तरफ नगर है = विद्यालयंउभयतः नगरं वर्तते।
   (*ii*) विद्यालय के चारों तरफ बाग है = विद्यालयमभितः परितः सर्वतः उद्यानं वर्तते।
2. समया और निकषा के योग में द्वितीया आती है :-
   (*i*) हमारा घर महाविद्यालय के समीप है = अस्माकं गृहं महाविद्यालयं निकषा वर्तते।
   (*ii*) मेरे घर के समीप दुकान है = मम गृहं समया आपणं अस्ति।
3. अन्तरा तथा अन्तरेण के योग में द्वितीया आती है :-
   (*i*) राजा और वज़ीर के मध्य में कौन खड़ा है = नृपं सचिवं चान्तरा कस्तिष्ठति ?
   (*ii*) ज्ञान के बिना सुख नहीं है = ज्ञानमन्तरेण नैव सुखम्।
4. "हा" (दुर्भाग्य, खेद) "धिक्" (धिक्कार) "प्रति" (को, पर, तरफ) और "विना" के योग में द्वितीया आती है :-
   (*i*) खेद है उन दुष्टों पर जो जनता को सताते हैं = हा तान् जाल्मान् ये लोकानुत्पीडयन्ति।
   (*ii*) वे छात्र धिक्कार के योग्य है जो गुरु का आदरनहीं करते।
   धिक् तान् छात्रान् ये गुरून् नाद्रियन्ते।
   (*iii*) दीन पर दया करो = दीनं प्रति दयां कुरु।
   (*iv*) ज्ञान के बिना सुख नहीं = ज्ञानं बिना न सुखम्।
5. अति, अनु, अभि और उप के योग में द्वितीया है :-
   (*i*) राम सहपाठियों से बढ़कर है = अति सहपाठिनो रामः।
   (*ii*) यज्ञ के पीछे खूब मेघ बरसा = यज्ञमनु भूरि वृष्टिरभवत्।
   यह लड़का बिलकुल बाप पर गया = अयं बालः पितरमनु।
   सारे प्रोफैसर प्रिंसिपल से छोटे होते हैं = सर्वे उपाध्यायाः प्राचार्यमनु।
   (*iii*) भक्त मूर्ति के समीप खड़े हैं = प्रतिमामभि भक्तास्तिष्ठन्ति।
   (*iv*) बच्चा माता के पास खेल रहा है = शिशुः मातरमुपक्रीडति।

द्विकर्मकधातु - द्वितीया

संस्कृत में कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनके साथ दो कर्म आ सकते हैं। एक प्रधान कर्म और दूसरा गौण कर्म। जब अपादानादि में अपादानादि का भाव प्रधान नहीं होता तो उनको भी कर्म बना दिया जाता है। उसी कर्म को गौण कर्म कहते हैं। संस्कृत में गौण - कर्म का अनुवाद द्वितीया में प्रायः किया जाता है। संस्कृत में द्विकर्मक धातु ये हैं :-

1. दुह् = दोहना - रामः गां पयः दोग्धि = राम गाय से दूध दुहता है।
2. याच् = माँगना - भिक्षुको धनिकं अन्नं याचते = भिखारी धनी से अनाज मांगता है।
3. पच् = पकाना - पाचकः तण्डुलान् ओदनं पचति = पाचक चावलों से भात पकाता है।
4. दण्ड् = सज़ा देना = राजा चौरं शतं दण्डयति = राजा चोर को सौ रुपये जुर्माना करता है।
5. रुध् = रोकना = सःव्रजमवरुणद्धिगाम् = वह ब्रज में गाय को रोकता है।
6. प्रच्छ् = पूछना - पथिको माणवकं पन्थानं पृच्छति = यात्री बच्चे से रास्ता पूछता है।
7. चि = चुनना - सः लतां पुष्पाणि चिनोति वह लता से फूल चुनता है।
8. ब्रू = बोलना - गुरु शिष्य धर्म वृते = गुरु शिष्यं के लिए धर्म कहता है।
9. शास् = शासन करना - आचार्यः शिष्यान् आचरम् शास्ति = उपदेश करना - आचार्य शिष्यों को आचार की बात बताता है।
10 जि = जीतना - शत्रुं शतं जयति = शत्रु से सौ रुपये जीतता है।

11. मन्थ् = मन्थता - माता दीधं नवनीतं मथ्नाति = माता दही से मक्खन निकालती है।
12. मुष् = चुराना - चौरः राजानं सहस्त्र मुष्णाति = चोर राजा के हजार रुपये चुराता है।
13. नी - वह् = ले जाना सः ग्राममजां नयति - वहति वा = वह गांव से बकरी ले जाता है।
14. हृ = चुराना - चौरःकृपणं धनमहरत् = चोर कंजूस का धन ले गया।
15. कृष् = खोदना = नरां: वसुधां रत्नानि कर्षन्ति = लोग ज़मीन से रत्न निकालते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क)

1. वीर शिवाजी ने अनेक दुर्गों पर अधिकार कर लिया (अधि + स्था)।
2. सुनते हैं कि विष्णु क्षीरसागर में रहते हैं (उप-वास)।
3. हम प्रतिदिन मन्दिर में जाते हैं।
4. राजा ने अपराधी पुरुषों को कठोर दण्ड दिया (दण्ड्)।
5. दुराचारी कुमार्ग पर चलते हैं (अभिनि - विश)।

(ख)

1. डाकू के दोनों तरफ सिपाही खड़े थे।
2. विद्यार्थी अध्यापक के चारों तरफ बैठे हैं।
3. विद्या के बिना सुख कहाँ ? (अन्तरेण)
4. शोक है! उस पुरुष पर जो धर्म पर आचरण नहीं करता।
5. धिक्कार है! उस पुरुष पर जो धर्म पर आचरण नहीं करता।
6. शील सब गुणों से बढ़िया (अति) होता है।
7. हम कक्षा में संस्कृत के बाद (अनु) अंग्रेजी पढ़ेंगे।
8. वह कन्या माता पर गई है (अनु)।
9. शिष्य गुरु के समीप (उप, अभि) नम्रतापूर्वक खड़ा हो गया।

(ग)

1. ग्वाला, गाय, भैंस तथा तथा बकरी का दूध दोहता है (दुह)।
2. मैंने पढ़ने के लिए राम से पुस्तक मांगी (याच्)।
3. हट्टे-कट्टे लोग भी सड़कों पर लोगों से पैसे मांगते फिरते हैं (भिक्ष्)।
4. रसोइया स्वामी के लिए भोजन पकाता है (पच्)।
5. जज चोर पर दस हजार रुपये दण्ड लगाता है (दण्ड्)।
6. सीता ने पूजा के लिए बेलों से फूल तोड़े (अव-चि)।
7. उपदेशक जनता को धर्म का उपदेश देते हैं (शास्)।
8. शकुनि ने युधिष्ठिर से राज्य जीत लिया (जि)।
9. चोरों ने सेठानी के गहने चुरा लिए (मुष्)।
10 थानेदार (कारागारध्यक्ष) कैदियों को जेल में बन्द रखता है (रुध्)।

3 करण - कारक
(तृतीया - विभक्ति)

कार्य की सिद्धि में जो साधन अत्यन्त सहायक होता है उसे करण कहते हैं। उस करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :- ''जलेन वस्त्रं प्रक्षालयति''। इस उदाहरण में धोने में ''जल'' अत्यन्त सहायक है, अत: उसमें तृतीया विभक्ति हुई।

हिन्दी में करण कारक की विभक्ति ''से-के द्वारा'' है। संस्कृत में इसका अनुवाद तृतीया से करते हैं. जैसे :- लोग आँखों से देखते हैं = मानवः नयनाभ्यां पश्यन्ति।

1. कर्मवाच्य और भाववाच्य में "कर्त्ता" एवं "करण" से तृतीया विभक्ति आती है :-

(क) कर्मवाच्य :- रामेण बाणेन हतो बालिः = राम ने बाण से बालि को मारा। यहाँ राम कर्त्ता है बाण करण है अतः दोनों में तृतीया होगी।

(ख) भाववाच्य :- तेन हस्यते = वह हंसता है।

2. जिस लक्षण या चिन्ह से किसी का विशेष प्रकार का होना प्रतीत होता है, उसमें तृतीया होती है। जैसे :- सः जटाभिस्तापसः प्रतीयते - वह जटाओं से तपस्वी ज्ञात होता है।

3. जिस अङ्गविकार से शरीर में विकृति दिखाई पड़े उसे विकृत अङ्ग में तृतीया होती है :- जैसे-

(*i*) सः अक्ष्णा काणोऽस्ति = वह आंख से काना है।

(*ii*) सः कर्णेन बधिरोऽस्ति = वह कान से बहरा है।

4. प्रकृत्यादि शब्दों के योग में तृतीया होती है। जैसे :-

प्रकृत्या जलं शीतलं भवति = जल स्वभाव से ठण्डा होता है।

5. काल और मार्ग के वाचक उन शब्दों में तृतीया आती है जिनमें अभीष्ट कार्य सिद्ध हो गया हो। जैसे-

काल में :- अहं मासेनेदं पुस्तकमपठम् = मैंने महीने में यह पुस्तक पढ़ डाली।

मार्ग में :- मया क्रोशेन व्याकरणमधीतम् = मैंने एक कोस में व्याकरण पढ़ा।

6. हेतु या कारण वाचक शब्द में तृतीया होती है। जैसे :-

(*i*) ब्रह्मचारी -अध्ययनेन अत्र वसति = अध्ययन के लिए ब्रह्मचारी यहाँ रहता है।

(*ii*) विद्यया यशो भवति = विद्या से यश होता है।

उपपद विभक्ति - तृतीया

ऊनार्थक, वारणार्थक, प्रयोजनार्थक, सहार्थक, समता-वाचक शब्दों के योग में तृतीया होती है :-

ऊनार्थक शब्द :- हीन, विहीन, न्यून, रहि, शून्य आदि के योग में तृतीया होती है।

जैसे :- (*i*) धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः = धर्म से हीन (लोग) पशुओं के तुल्य होती है।

(*ii*) धनेन रहितो नरः सुखं न लभते = धन से रहित नर सुख नहीं पाता।

3. वारणार्थक शब्द :- अलम्, कृतम, किम् आदि के योग में तृतीया होती है। जैसे :-

(*i*) अलमति विस्तरेण = बहुत विस्तार को रहने दो।

(*ii*) कृतमेतेन क्रन्दनेन = इस चीख - पुकार को रहने दो।

(*iii*) अध्ययनेन किम् = ऐसी पढ़ाई से क्या ?

4. प्रयोजनार्थक शब्द :- किम, कार्यम्, अर्थ, प्रयोजनम्, गुणः, लाभ आदि शब्दों के योग में तृतीया होती है। जैसे :-

तेन वित्तेन किम् (किं प्रयोजनम्, कोऽर्थः को लाभः) यन्न भुज्यते न दीयते।

उस धन से क्या जो न भोगा जाता न दिया जाता है।

सहार्थक शब्द :- "साथ का अर्थ देने वाले सह, सार्धम, साकम्, समम् के योग में भी तृतीया होती है।"

जैसे :- लक्ष्मी प्रायेण विद्यया सह (सार्धम्, साकम्, समम्) न तिष्ठति।

लक्ष्मी प्रायः विद्या के साथ नहीं रहती।

समतावाचक शब्द :- सम, समान, तुल्य, सदृश, तथा इनके अर्थ वाले दूसरे शब्दों के योग में भी तृतीया होती है। जैसे :-

(*i*) हनुमान के समान वीर तो भीम ही था।

हनुमता समः (समानः तुल्यः, सदृशः) वीरस्तु भीम एवासीत्।

धर्मेण हीनाः पशुभिः समानः (समः तुल्यः सदृशः) भवन्ति

(*ii*) धर्महीन मनुष्य पशुओं के समान होते हैं।

संस्कृत में अनवाद करो :-

(क)

1. जीव - जन्तु नाक से साँस लेते हैं।
2. सर्जन मरहमपट्टी से घाव भरता है।
3. दर्जी कैंची से कपड़ा काटता है।
4. उसने दस कोस में महाभाष्य पढ़ डाला।
5. सिर की चोटी से वह हिन्दू जान पड़ता था।
6. सिगरेट पीने के कारण बेचारे को दमा हो गया।
7. वह पांव से लंगड़ा है अतः धीरे चलता है।
8. अपने कुकुर्मों के कारण वे घोर दुःख उठा रहे हैं।
9. नाई उस्तरे से हजामत बनाता है।

(ख)

1. अब हँसी - ठट्ठा छोड़ो।
2. अब बातें करना बन्द करो।
3. बहिन भाई के साथ विद्यालय गई।
4. ज्ञान से हीन मनुष्य कैसे सुखी रह सकते हैं ?
5. वह धर्म ही नहीं जो सत्य से रहित हो।
6. वह वीरता में भीम के समान है।
7. विद्यार्थी मित्रों के समय गेंद खेलते हैं।

कठिन शब्द :-

1. दरज़ी = सूचिकः। 2. कैंची = कर्तरी। 3. सर्जन = शल्यचिकित्सकः। 4. मरहमपट्टी = प्रेलेपपट्टिका। 5. नाई = नापितः। 6. उस्तरे से = क्षुरेण। 7. हजामत बनाता है = शिरःमुण्डयति। 8. सिगरेट = धूम्रवर्तिका।

4. सम्प्रदान - कारक

(चतुर्थ - विभक्ति)

कर्त्ता दान के द्वारा जिसे सन्तुष्ट करना चाहता है, वह पदार्थ सम्प्रदान होता है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे :- विप्राय गां ददति'' -वह ब्राह्मण के लिए गाय देता है। यहां गाय देकर ब्राह्मण को ही सन्तुष्ट करना कर्त्ता को अभीष्ट है।

सम्प्रदान का शाब्दिक अर्थ है-अच्छी प्रकार दिया गया दान अर्थात् जो वस्तु सदा के लिए दी जाती है, वहीं सम्प्रदान होगा। जहाँ दी वस्तु वापस ली जाती हो वहाँ नहीं। जैसे :- स रजकस्य वस्त्रं ददाति = वह धोबी को वस्त्र देता है, यहां धोबी को वस्त्र देकर वापस लिए जाते हैं अतः **''रजकस्य''** में चतुर्थी नहीं होती।

हिन्दी में सम्प्रदान कारक की विभक्तियाँ ''को'' ''के लिए'' ''के वास्ते'' ''के निमित्त'' तथा ''ऐ, ऐं'' हैं। संस्कृत में इनका अनुवाद चतुर्थी से करते हैं। जैसे :-

(*i*) विद्यार्थी को पुस्तकें दे दो = छात्राय पुस्तकानि देहि।

(*ii*) हकीकत ने धर्म के लिए प्राण दे दिए = हकीकतो धर्माय प्राणानसृजत्।

(*iii*) हम उन्हें वस्त्र देते हैं = वयं तेभ्यो वस्त्राणि दद्मः।

1. रुच् (प्रसन्न करना - पसन्द आना) तथा इसी के अर्थ वाली दूसरी धातुओं के योग में भी प्रसन्न होता हो उसमें चतुर्थी आती है। जैसे :-

श्याम को संस्कृत की कविता बहुत अच्छी लगती है।

श्यामाय संस्कृत काव्यं बहु रोचते।

2. क्रुध, दुह, ईर्ष्य, असूय् तथा इन्हीं के अर्थों वाली दूसरी धातुओं के योग में जिनमें द्रोहादि किया जाता है उनके लिए चतुर्थी आती है। जैसे :-

(*i*) गुरु शिष्य पर क्रोध करता = गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।

(*ii*) मूर्ख पण्डित से द्रोह करता है = मूर्खः पण्डिताय दुह्यति।

(*iii*) दुष्ट सेवक स्वामी से ईर्ष्या, और असूया करता है = दुष्टसेवरकः स्वामिने ईर्ष्यति असयूतिच।

3. कथ, ख्या, चक्ष, ब्रू, वच् तथा शंस् धातुओं के योग में जिसे कुछ कहा जाता है उनके लिए चतुर्थी आती है। जैसें :-

तुमने उससे क्या कहा था ? - त्वं तस्मै किमकथयः ?

उपपद विभक्ति - चतुर्थी

(क) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधाष वषट् तथा सामर्थ्य के वाचक "अलम्" और इसके पर्याय - वाची शक्त, प्रभु, समर्थ आदि शब्दों के योग में चतुर्थी आती है। जैसे :-

1. नाम :- (*i*) ईश्वर को नमस्कार है = ईश्वराय नमः।
   (*ii*) तुझे नमस्कार हो = नमस्ते।
2. स्वस्ति - राम का कल्याण हो = रामाय स्वस्ति।
3. स्वाहा - अग्नि के लिए स्वाहा = अग्नेय स्वधा।
4. स्वधा - यह आहुति पितरों के लिए = पितृभ्यः स्वाहा।
5. वषट् - यह इन्द्र के लिए = इन्द्राय वषट्।
6. भारत पाकिस्तान के लिए पर्याप्त है। = भारतः पाकिस्तानाय अलम्।
7. उस दुष्ट के लिए तो मैं काफी हूँ = अहं तस्मै दुष्टाय प्रभवामि

(ख) बलि, हित, सुख, रक्षित, कुशलम्, भद्रम, मङ्गलम, आयुष्यम् आदि आशीस्-वाचक शब्दों के योग में चतुर्थी आती है। जैसे :-

1. कौओं के लिए बलि = काकेभ्यः बलि।
2. विद्या सबके लिए लाभकारी है = विद्या सर्वेभ्यो हितम्।
3. संसार का उपकार करने वालों का कल्याण हो = भद्रं (मंगलं) लोकोपकारिभ्यः
4. अनाथों के रक्षक सुखी हों = अनाथानां रक्षकः सुखम् कुशलं वा।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क)

1. मुनि मोक्ष के लिए ईश्वर को भजता है।
2. जो भूखों को अन्त नहीं देता वह पाप करता है।
3. ऋषि - दयानन्द ने गुरु के लिए लौंग दिये।
4. प्रधानाचार्य ने योग्य विद्यार्थियों को इनाम दिया।
5. दुर्जन सज्जन से द्रोह करता है।
6. हमें तो विदेशी वस्तुएँ ज़रा भी अच्छी नहीं लगतीं (रुचत्)।
7. बच्चे रंगदार पदार्थों को चाहते हैं (रुच्)।
8. बालकों को लड्डू अच्छे लगते हैं।
9. उसको स्वभाव ही है कि वह सबसे द्रोह, ईर्ष्या और असूया करता है।
10. मूलज़िम ने चोरी की सारी बात जज को विस्तार-पूर्वक बता दी (कथ)।

(ख)

1. गुरुजनों को प्रणाम।
2. विदेश में जाने वालों का कल्याण हो।
3. तुम्हारे जैसे दस के लिए अकेली काफी हूँ (प्र-भू)।
4. अकेला राम चौदह हज़ार राक्षसों पर भारी था।
5. विद्या प्रचारक ब्राह्माणों का भला हो (हितम्)।
6. ब्राह्मणों और गौओं का कल्याण हो (भद्रम्)।
7. उसे पतले दस्त आते हैं (सः अतिसारकी), इसमें लघन ही अच्छा (हितम्)

5. अपादाच कारक
(पञ्चमी विभक्ति) :

जहाँ से कोई वस्तु पृथक् होती है, उसे अपादान कहते हैं। अपादान प्रायः ध्रुव या स्थिर होता है। हिन्दी से अपादान की विभक्ति "से" होती है। संस्कृत में इसका अनुवाद पञ्चमी से होता है। जैसे :-

वृक्ष से पत्ते गिरते हैं = वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

1. जिसकी अपेक्षा किसी को बढ़िया या घटिया बताया जाये, उसमें पंचमी विभक्ति आती है। जैसे:-
   (*i*) माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है।
   जननी **जन्मभूमिश्च** स्वर्गादपि गरीयसी।
   (*ii*) भरत राम से छोटा था।
   भरतो रामात् कनीयानासीत्।
2. जुगुप्सा – जिससे घृणा की जाय, विराग – जिससे रुका, बचा या बाज रहा जाये और प्रमाद – जिससे लापरवाही या प्रमाद किया जाये उसमें पंचमी विभक्ति आती है जैसे :-
   (*i*) वह चोरी से घृणा करता = सश्चौर्याद् – जुगुप्सते।
   (*ii*) वीर अपने कर्त्तव्य से नहीं हटते = वीराः स्वकर्त्तव्यान्न विरमन्ति।
   (*iii*) स्वाध्याय में लापरवाही न करनी चाहिए = स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यम्।
3. "डरना" अर्थ वाली "भी" आदि धातुओं तथा "रक्षा करना" अर्थ वाली "त्रै" आदि धातुओं के योग में भय के कारण में पंचमी आती है।
   (*i*) वह शेर से डरता है = स सिंहाद्बिभेति।
   (*ii*) राजा प्रजा की डाकुओं से रक्षा करता है = नृपः दस्युभ्यः प्रजास्त्रायते (रक्षति)।
4. "जन्" के योग में (जायते) उत्पत्ति के मुख्य कारण में और प्र + भू (प्रभवति) के योग में निकास स्थान में पंचमी आती है। जैसे :-
   (*i*) ब्रह्म से प्रजा पैदा होती है = ब्राह्मणः प्रजा जायन्ते।
   (*ii*) हिमालय से गंगा निकलती है = **हिमालयात्** गंगा प्रभवति।
5. जिससे किसी को रोका यो हटाया जाता है उसमें पञ्चमी होती है। जैसे :-
   खेत में जौ से गाय को हटाता है = यवेक्यात् गां वारयति क्षेत्रे।
6. "परा + जि" में योग में जो वस्तु असहनी हो जाती है उसमें पंचमी आती है। जैसे :- वह अध्ययन से ऊब गया है = असौ अध्ययनात् पराजयते।
7. जिस गुरु आदि से नियमपूर्वक कोई चीज सीखी जाती है उसमें पंचमी आती है। जैसे :- वह गुरु जी से पढ़ता है = स उपाध्यायादधीते।
8. जिससे कोई छिपता है उसमें पञ्चमी आती है। जैसे :-
   कृष्ण माता से छिपता है = कृष्णः मातुः निलीयते।
9. वह काल या स्थान वाचक शब्द पञ्चमी में आता है जिससे किसी और काल या स्थान को लाया जाता है। स्थान का अन्तर बतलाने वाले शब्द में प्रथमा या सप्तमी आती है और काल का अन्तर बताने वाले शब्द में केवल सप्तमी। जैसे :-
   (*i*) घर से नदी एक कोस है = गृहान्नदी क्रोशम्।
   (*ii*) वैशाखी से रखड़ी चार मास बाद होती है = वैशाख्याः रक्षा बन्धनं चतुर्षु मासेषु।

उपपद विभक्ति - पञ्चमी

1. "कोई और" "कोई दूसरा" "उससे भिन्न" अर्थों के वाचक "अन्य", "इतर", "भिन्न", "पर", "अपर", आदि शब्द, दूरी तथा समीपता का वाचक "आरात्" शब्द, सिवा या बिना वाचक "ऋते"

शब्द, काल या दिशा बताने वाले "पूर्व, उत्तर" आदि दिशा वाचक शब्द, "आच्" धातु से बने हुए दिशा वाचक "प्राक् प्रत्यक्" आदि शब्द "आ" तथा "आहि" प्रत्ययान्त अव्यय इन सबके योग में पञ्चमी आती है। जैसे :-

(1) कृष्ण से भिन्न कंस को कौन मार सकता था = कृष्णादन्यः कः कंसं हन्तुमश्क्नोत्।

(2) मेरा घर विद्यालय के समीप है और बाग से दूर = मम गृहं **विद्यालयात्** समीपं उद्यानाच्च आरात्।

(3) ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं = ज्ञानाद् ऋते न मुक्तिः।

(4) धर्मपुर गाँव शिमला से उत्तर की ओर है = धर्मपुर नामको ग्रामः शिमलानगरादुत्तरोऽस्ति।

(5) हमारे गांव के पूर्व में धर्मशाला है = अस्माकं ग्रामात् प्राक् धर्मशाला वर्तते।

दोपहर से पूर्व ही पुस्तक समाप्त होगी = मध्याह्नात् प्रागेव दक्षिणा (दक्षिणाहि)

(6) हमारा घर किले के दक्षिण की ओर है = **अस्मांक** गृहं दुर्गाद् दक्षिणा (दक्षिणाहि)

2. पृथक, बिना तथा नाना के योग में पञ्चमी के अतिरिक्त द्वितीया तथा तृतीया भी आती है जैसे:-

ज्ञान के बिना सुख कहां ? = ज्ञानाद् (ज्ञानम् - ज्ञानेन! बिना पृथक्, नाना) कुतः सुखम् ?

3. जब "आ" का प्रयोग "से लेकर" के अर्थ में होता है तब इसके योग में पंचमी आती है। जैसे :- घर से लेकर विद्यालय तक एक भी वृक्ष नहीं = आगृहाद् विद्यालयपर्यन्तं एकोऽपि वृक्षो न वर्तते।

4. तरप् प्रत्यान्त पद के द्वारा जिससे तुलनात्मक भेद दिखाया जाता है उसमें पञ्चमी होती है। जैसे :- देवदत्त श्याम से निपुण है - देवदत्तः श्यामात् पटुतरोऽस्ति।

5. बहिः बाहर, अनन्तरम् = बाद में, परम् = बाद में, उर्ध्वम् = ऊपर, प्रभृति = से लेकर, आरम्भ = से लेकर, को योग में पञ्चमी लगती है। जैसे :-

(*i*) नगर से बाहिर विद्यालय है = नगरात् बहिः विद्यालयोऽस्ति।

(*ii*) सन्ध्या के बाद भोजन करो = सन्धायाः अनन्तरं भोजनं कुरु।

(*iii*) इससे परे कुछ भी नहीं है = अस्मात् परं किमपि न विद्यते।

(*iv*) इन्द्रियों से ऊपर मन है = इन्द्रियेभ्यः उर्ध्व मनो वर्तते।

(*v*) बचपन से लेकर यहाँ पढ़ता हूँ = शैशवाद् - आरभ्य (प्रभृति) अत्र पठामि।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. बच्चा घर से गिर पड़ा।
2. वृक्ष से तीन पके हुए फल गिरते हैं।
3. गन्दगी से मच्छर और मक्खियाँ पैदा हो जाती हैं।
4. लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है (प्र + भू)।
5. मैंने अनुवाद करना गुरू जी से सीखा था।
6. जंगल में शेर की दहाड़ से यात्री डर गए।
7. वह बाल्यकाल से ही चतुर है।
8. दो मील तक पैदल चलो उसके बाद रथ पर चलेंगे।
9. कुरुक्षेत्र नगर के बाहर बहुत से तालाब हैं।
10 नगर के दक्षिण में श्मशान है।

6. सम्बन्ध
(षष्ठी विभक्ति)

वस्तुतः "सम्बन्ध" कारक नहीं है क्योंकि उसका क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता बल्कि वाक्य के किसी दूसरे शब्द से होता है।

हिन्दी में "सम्बन्ध" की विभक्तियाँ "का, के, की, र, रे, री हैं।" संस्कृत में इनका अनुवाद षष्ठी विभक्ति से किया जाता है। जैसे :-

(*i*) श्री राम के राज्य में बच्चे नहीं मरते थे = श्रीरामस्य राज्ये शिशवो नाम्रियन्ते।

(*ii*) कालीदास का रुघुवंश एक अमर रचना है = कालिदासस्य रघुवंशममराकृतिः।

(*iii*) तुम्हारी पुस्तक तो यह पड़ी है मेरी न जाने कहाँ गायब हो गई = तब पुस्तकं त्विह वर्तते मम न जाने क्व नष्टम्।

1. "हेतु" शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे :-
   अन्न के कारण रहता है = **अन्नस्य** हेतुर्वसति।

2. अधिपूर्वक "इ" स्मरण करना, "दय्" दया करना, "ईश्" समर्थ होना तथा इन्हीं अर्थों वाली अन्य धातुओं के कर्म में प्रायः षष्ठी आती है। जैसे :-

(*i*) बच्चा माता को याद करता है = शिशुः मातुः स्मरति।

(*iii*) वह निर्धन पर दया करता है = सः निर्धनस्य दयते।

3. जहाँ बहुतों में से एक या अधिक को किसी विशेषता के कारण चुनना हो वहाँ जिनमें से चुनाव करना हो उनके लिए षष्ठी या सप्तमी आती है।
   रजनीश छात्रों में श्रेष्ठ है = रजनीशः छात्रेषु वा श्रेष्ठः।

4. दूर तथा समीप वाची शब्दों के योग में षष्ठी या सप्तमी आती है। जैसे :-
   हमारे घर से दूर नदी बहती है = अस्माकं गृहस्य गृहाद्वा दूरे नदी वहति।

5. उपरि, उपरिष्टात्, अधस्तात्, पुरः पुरस्तात्, पश्चात्, पश्चात्, अग्रे, उत्तरतः दक्षिणतः, के योग में षष्ठी होती है। जैसे :-

(*i*) नगर के उत्तर में उद्यान है = नगरस्योत्तरत उद्यानमस्ति।

(*ii*) उसके आगे कौन जा रहा है = तस्य अग्रे कः गच्छति ?

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. बाज़ार हमारे घर से दूर है।
2. राजपूतों के घर वेद का पाठ होता है।
3. पिता की आज्ञा से राम वन में गए।
4. पिता की आज्ञा से राम वन में गए।
5. हिमालय भारतवर्ष की उत्तर दिशा में है।
6. सब वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।
7. वेद सब ग्रन्थों में प्राचीन है।
8. मूर्ख अन्न के कारण यहाँ रहता है।
9. देवताओं ने भी भारत की प्रशंसा की है।
10. हमारी कौन सुनता है, सब अपने मन की करते हैं।

7. अधिकरण कारक

(सप्तमी विभक्ति)

किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। जिस स्थान में या जिस स्थान पर कोई क्रिया होती है तो उसे अधिकरण कहते हैं।

हिन्दी में अधिकरण की विभक्तियाँ = में, पर, अन्दर, ऊपर आदि है। संस्कृत में इनका अनुवाद सप्तमी से किया जाता है। जैसे :-

तेल तिलों में होता है = तैलं तिलेषु वर्तते।

1. जिस समय में कोई क्रिया होती है उसमें भी सप्तमी होती है जैसे :- मैं सवा पांच बजे आऊँगा = अहं सपादपञ्च वादन समये आगमिष्यामि।
2. "विषय में", "बारे में" तथा समय - बोधक शब्दों के योग में सप्तमी आती है। जैसे :- मोक्ष के विषय में (बारे में) इच्छा है = मोक्षे इच्छा - अस्ति।
   वह (दिन में) काम करता है = स दिने, प्रातः काले, सायंकाले कार्यं करोति।
3. जब बहुत सी वस्तुओं में से एक का बढ़ियापन या घटियापन दिखाना हो तब जिनमें से एक या अधिक को चुनना हो उनके लिए सप्तमी आती है और षष्ठी भी। जैसे :-
   गौओं में काली गाय अधिक दूध देती है = गोषु (गवाम्) कृष्णा बहुक्षीरा)।
4. "सिन्ह्" धातु के योग में भी सप्तमी होती है। जैसे :-
   गुरू शिष्य से, स्नेह करता है = गुरुः शिष्ये स्निह्यति।
5. "साधु" तथा "असाधु" शब्द के योग में सप्तमी आती है। जैसे :-
   (*i*) सुपुत्र माता से अच्छा व्यवहार करता है = सुपुत्रः मातरि साधुः।
   (*ii*) कुपुत्र माता से बुरा व्यवहार करता है = कुपुत्रः मातरि असाधुः।
6. चतुरार्थक - कुशल, निपुण, प्रवीण पटु, दक्ष आदि शब्दों के योग में सप्तमी आती है। जैसे :-
   वह शास्त्र में निपुण हैं = सः शास्त्रे निपुणः, कुशलः दक्षः ....।
7. संलग्नार्थ युक्त, तत्परः व्यापृत, संलग्न आदि शब्दों के योग में सप्तमी आती है। जैसे :-
   वह पढ़ाई में लगा हुआ है = सोऽध्ययने संलग्नः, तत्पर : ....।
8. भावे सप्तमी या "सति" सप्तमी :-
   जिस प्रसिद्ध कृदन्त क्रिया द्वारा दूसरी क्रिया लक्षित होती है, उसमें सप्तमी आती है और कृदन्त के लिंग और वचन कर्त्ता केसमान होते हैं। जैसे :-
   (*i*) सूर्य के उदय होने पर कमल खिलते हैं = सूर्य उदिते सति कमलानि विकसन्ति।
   (*ii*) तार आने पर वह झट चल पड़ा = विद्युत्समाचारे प्राप्तेसति झटिति असौ प्रस्थितः।

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. वह आश्रम रावी - नदी के तट पर है।
2. चम्बा के मिंजर मेले में सब नाचते हैं।
3. गाड़ी सवा सात बजे आयेगी।
4. सज्जन लोग गुण-हीन मनुष्यों पर भी दया करते हैं।
5. माता अपने पुत्र से स्नेह करती है।
6. जिस कुल में तुम उत्पन्न हुए हो वहाँ हाथी नहीं मारे जाते।
7. पक्षियों में कौआ बहुत चतुर है।
8. भरत के प्रार्थना करने पर भी श्रीराम आयोध्या नहीं लौटे।
9. जब यशोधरा सोई थी तब गौतम घर से निकला।
10. अंग्रेज़ों के मना करने पर भी दयानन्द ने सत्य का प्रचार किया।